

Chapter-6: भक्ति - सूफी परंपराएँ

भक्ति आंदोलन:-

- 8 वीं - 18 वीं शताब्दी से भक्ति आंदोलन , इस्लाम और सूफी आंदोलन ने मध्यकालीन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- अल्वार और नयनार दक्षिणी भारत में भक्ति आंदोलन के संस्थापक माने जाते थे।
- अल्वार भगवान विष्णु के भक्त थे, जबकि नयनार शैव धर्म के अनुयायी थे।
- अल्वार और नयनार दोनों ने समाज में प्रचलित सामाजिक और धार्मिक दुर्भावनाओं की कड़ी आलोचना की।
- अलवर की दो महिला संत - अंदल और नयनार की अम्माईयर की कराईकल ने समाज को एक नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- चोल, पल्लव और चालुक्य ने अलवर और नयनार दोनों पंथों का संरक्षण किया।
- बासवन्ना ने कर्नाटक में वीरशैव या लिंगायतों की स्थापना की और अपने पंथ के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस्लाम :-

'इस्लाम' एक एकेश्वरवादी धर्म है जो अल्लाह की तरफ से अंतिम रसूल और नबी , मुहम्मद द्वारा इंसानों तक पहुंचाई गई अंतिम ईश्वरीय किताब (कुरआन) की शिक्षा पर स्थापित है । इस्लाम की स्थापना 7 वीं शताब्दी में पैगंबर मुहम्मद ने अजाबिया में की थी ।

इस्लाम के स्तंभ हैं :-

1. शहादा
2. सलात या नमाज़
3. सौम या रोज़ा
4. ज़कात
5. हज

- इस्लाम की पवित्र पुस्तक कुरान शरीफ है। यह अरबी में लिखा गया है और इसमें 114 अध्याय हैं।
- मुस्लिम परंपरा के अनुसार कुरान उन संदेश का संकलन है जो भगवान (अल्लाह) ने अपने दूत अर्ख ल जिब्रीस के माध्यम से मक्का और मदीना में 610 - 632 के बीच मुहम्मद को भेजने के लिए भेजा था।

इस्लाम की महत्वपूर्ण सिलसिलें :-

- चिश्ती सिलसिला
- सुहरावर्दी सिलसिला
- कादिरि सिलसिला
- नक़शबन्दी सिलसिला

सूफी तथा सूफीवाद :-

- भारत में मध्यकालीन काल के दौरान सूफीवाद एक शक्तिशाली आंदोलन के रूप में उभरा। सूफियों को उनके दिलों की पवित्रता (सफा) के कारण कहा जाता था।
- सूफी (सूफ़) पहनने की उनकी आदत के कारण सूफी को ऐसा कहा जाता था।
- ईश्वर एकता , पूर्ण आत्म - समर्पण , दान , इबादत , मानव जाति के लिए प्रेम आदि सूफीवाद के मुख्य उपदेश हैं। इस्लामी दुनिया में सूफी सिलसिले उभरने लगते हैं।
- दाता गुंज बख़्श , ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती , शेख कुतुबुद्दीन । बख्तियार काकी , फरीदुद्दीन गुंज - ए शकर , और शेख निजामुद्दीन औलिया भारत के कुछ प्रमुख सूफी शेख हैं।

ज़ियारत :-

- ज़ियारत का अर्थ सूफी संतों की कब्रों की तीर्थयात्रा करना था । इसका मुख्य उद्देश्य सूफी से आध्यात्मिक अनुग्रह प्राप्त करना था । संगीत और नृत्य ज़ियारत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं । सूफियों का मानना था कि संगीत और नृत्य मानव हृदय में दिव्य परमानंद पैदा करते हैं ।

- सूफीवाद के धार्मिक आयोजन को साम के नाम से जाना जाता है ।

क्वाल :-

क्वाल एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ था 'कहना' । यह कव्वालों के खुलने या बंद होने के समय गाया जाता था ।

भक्ति :-

मोक्ष प्राप्ति के अंतिम उद्देश्य के साथ भगवान की भक्ति को भक्ति कहा जाता है । भक्ति शब्द को मूल 'भज' से लिया गया था जिसका अर्थ है आराध्य । भक्त जो अवतार और मूर्ति पूजा के विरोधी थे, संत के रूप में जाने जाते हैं । कबीर, गुरु नानक देव जी और गुरु नानक देव जी के उत्तराधिकारी प्रमुख भक्ति संत हैं । भारतीय समाज पर भक्ति आंदोलन का प्रभाव महत्वपूर्ण और दूरगामी था ।

विभिन्न धार्मिक विश्वास और प्रथाएं :-

- देवी और देवताओं की एक विस्तृत श्रृंखला मूर्तिकला के साथ - साथ ग्रंथों में भी पाई गई थी । पुराणिक ग्रंथों की रचना और संकलन सरल संस्कृत भाषा में किया गया था जो महिलाओं और शूद्रों के लिए सुलभ हो सकता था, जो आमतौर पर वैदिक शिक्षा से वंचित थे । कई मान्यताओं और प्रथाओं को स्थानीय परंपराओं के साथ पुराणिक परंपराओं के निरंतर मेलिग के माध्यम से आकार दिया गया था । ओडिशा का जगन्नाथ पंथ स्थानीय आदिवासी विशेषज्ञों द्वारा लकड़ी से बना स्थानीय देवता था और इसे वि रूप में मान्यता प्राप्त थी ।
- स्थानीय देवताओं को अक्सर पुरातन ढांचे के भीतर शामिल किया गया था, उन्हें प्रमुख देवताओं की पत्नी के रूप में एक पहचान प्रदान करके । उदाहरण के लिए, वे विष्णु की पत्नी लक्ष्मी या शिव की पत्नी पार्वती के साथ समान थे । उप - महाद्वीप के कई हिस्सों में तांत्रिक साधनाएँ व्यापक थीं । इसने शैव धर्म के साथ बौद्ध धर्म को भी प्रभावित किया ।
- वैदिक अग्नि, इंद्र और सोम के प्रमुख देवता पाठ्य या दृश्य अभ्यावेदन में शायद ही कभी दिखाई देते थे । अन्य सभी धार्मिक मान्यताओं, जैसे बौद्ध

धर्म , जैन धर्म , तांत्रिक प्रथाओं ने वेदों के अधिकार को अनदेखा कर दिया । भक्ति रचना का गायन और जप वैष्णव और शैव संप्रदायों के लिए विशेष रूप से पूजा का एक तरीका बन गया ।

प्रारंभिक भक्ति परंपरा :-

- इतिहासकारों ने भक्ति परंपराओं को दो व्यापक श्रेणियों अर्थात निर्गुण (विशेषताओं के बिना) और सगुण (विशेषताओं के साथ) में वर्गीकृत किया है ।
- छठी शताब्दी में , भक्ति आंदोलनों का नेतृत्व अल्वार (विष्णु के भक्त) और नयनार (शिव के भक्त) ने किया था ।
- उन्होंने तमिल भक्ति गीत गाते हुए जगह जगह यात्रा की । अपनी यात्रा के दौरान , अल्वार और नयनार ने कुछ धार्मिक स्थलों की पहचान की और बाद में इन स्थानों पर बड़े मंदिरों का निर्माण किया गया ।
- इतिहासकारों ने सुझाव दिया कि अल्वार और नयनारों ने जाति व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन शुरू किया । अल्वार द्वारा रचित नलयिरा दिव्यप्रबंधम को तमिल वेद के रूप में वर्णित किया गया था ।

स्त्री भक्त :-

- इस परंपरा की विशेषता थी इसमें स्त्रियों को भी स्थान था । अंडाल , कराइकल अम्मारियार जैसी महिला भक्तों ने भक्ति संगीत की रचना की , जिसने पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती दी ।
- अंडाल नामक अल्वार स्त्री के भक्ति गीत गाए जाते । अंडाल खुद को भगवान विष्णु की प्रेयसी मानकर प्रेम भावना छन्दों में व्यक्त करती थी ।
- शिवभक्त स्त्री कराइकाल अम्मइयार ने घोर तपस्या के मार्ग अपनाया ।
- नयनार परम्परा में उनकी रचना को सुरक्षित रखा गया ।

राज्य के साथ संबंध :-

- नयनार और अल्वार संतो को कृषको द्वारा सम्मानित किया गया शासको ने भी इनका समर्थन पाने का प्रयास किया ।

- चोल शासको ने दैवीय समर्थन पाने का दावा किया । चोल शासकों के संरक्षण में ,चिदंबरम ,तंजावुर और गंगई कोंडाचोलपुरम में बड़े और भव्य मंदिरों का निर्माण किया गया था । इस प्रकार संतो की कविता और विचारों को मूर्त रूप दिया ।
- शाही संरक्षण के तहत मंदिरों में तमिल शैव भजन गाए जाते थे । उन्होंने भजनों का संकलन एक ग्रन्थ के रूप में किया

कर्नाटक में वीरशैव परंपरा :-

- कर्नाटक में 12 वीं शताब्दी में बसवन्ना नाम के एक ब्राह्मण के नेतृत्व में एक नया आंदोलन उभरा । उनके अनुयायियों को वीरशैव (शिव के नायक) या लिंगायत (लिंग के वस्त्र) के रूप में जाना जाता था । यह शिव की पूजा लिंग के रूप में करते हैं इस क्षेत्र में लिंगायत आज भी एक महत्वपूर्ण समुदाय बने हुए हैं ।
- लिंगायत ऐसा मानते थे की भक्त मृत्यु के बाद शिव में ली हो जायेगा इस संसार में दुबारा नहीं लौटेगा । लिंगायतो ने पुनर्जन्म को नहीं माना . लिंगायतो ने जाति प्रथा का विरोध किया । ब्रह्मनीय समाजिक व्यवस्था में जिनके साथ भेदभाव होता था वो लिंगायतो के अनुयायी हो गए । लिंगायतो ने वयस्क विवास , विधवा पुनर्विवाह को मान्यता दी
- लिंगायतों ने जाति , प्रदूषण , पुनर्जन्म के सिद्धांत आदि के विचार को चुनौती दी और युवावस्था के बाद के विवाह और विधवाओं के पुनर्विवाह को प्रोत्साहित किया ।
- वीरशैव परंपरा की हमारी समझ कन्नड़ में वचनों (शाब्दिक रूप से कही गई) से ली गई है , जो आंदोलन में शामिल हुई महिलाओं और पुरुषों द्वारा बनाई गई हैं ।

उत्तरी भारत में धार्मिक उफान :-

- इसी काल में उत्तरी भारत में भगवान शिव और विष्णु की उपासना मंदिरों में की जाती थी । मंदिर शासको की सहायता से बनाए गए थे । उत्तरी भारत में इस काल में राजपूत राज्यों का उदभव हुआ । इन राज्यों में

ब्राह्मणों का वर्चस्व था । ब्राह्मण अनुष्ठानिक कार्य (पूजा , यज्ञ) करते थे ।

- ब्राह्मण वर्ग को चुनौती शायद ही किसी ने दी हो । इसी समय कुछ ऐसे धार्मिक नेता भी सामने आए जो रूढ़िवादी ब्रह्मनीय परम्परा से बाहर आए । ऐसे नेताओं में नाथ , जोगी सिद्ध शामिल थे ।
- अनेक धार्मिक नेताओं ने वेदों की सत्ता को चुनौती दी । अपने विचारों को आम लोगों की भाषा में सबके सामने रखा । इसके बाद तुर्क लोगों का भारत में आगमन हुआ । इसका असर हिन्दू धर्म और संस्कृति पर पड़ा ।

इस्लामी परम्पराएँ :-

- प्रथम सहस्राब्दी ईसवी में अरब व्यापारी समुन्द्र के रास्ते से पश्चिमी भारत के बंदरगाहों तक आए ।
- इसी समय मध्य एशिया से लोग देश के उत्तर - पश्चिम प्रांतों में आकर बस गए ।
- सातवीं शताब्दी में इस्लाम के उद्भव के बाद ये क्षेत्र इस्लामी विश्व कहलाया ।

शासकों और शासितों के धार्मिक विश्वास :-

- 711 ईसवी में मुहम्मद बिन कासिम नाम के एक अरब सेनापति ने सिंध को जीत लिया और उसे खलीफा के क्षेत्र में शामिल कर लिया
- 13 वीं शताब्दी में , तुर्क और अफगानों ने भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली सल्तनत की स्थापना की ।
- 16वीं शताब्दी में मुगल सल्तनत की स्थापना हुई । सैद्धांतिक रूप से , मुस्लिम शासकों को उलमा द्वारा निर्देशित किया जाना था और शरीयत के नियमों का पालन करना था । लेकिन ऐसा करना मुश्किल था क्यूकी एक बड़ी जनसंख्या इस्लाम को मैनने वाली नहीं थी ।

जिम्मी :-

- जिम्मी ऐसे लोग थे जो गैर मुसलमान थे जैसे - हिन्दू , ईसाई , यहूदी ।

- गैर - मुसलमानों को जजिया नामक कर का भुगतान करना पड़ता था और मुस्लिम शासकों द्वारा संरक्षित होने का अधिकार प्राप्त होता था ।
- अकबर और औरंगज़ेब सहित कई मुगल शासकों ने भूमि की बंदोबस्ती की और हिंदू , जैन , पारसी , ईसाई और यहूदी धार्मिक संस्थानों को कर में छूट दी । बहुत से शासको ने भूमि अनुदान व कर में छूट दी ।

लोक प्रचलन में इस्लाम :-

- इस्लाम के आने के बाद समाजों में बहुत परिवर्तन हुए । किसान , शिल्पकार , योद्धा , व्यापारी इन सबमें बदलाव हुए ।
- लोग कभी - कभी उस क्षेत्र के संदर्भ में पहचाने जाते थे जहां से वे आए थे । प्रवासी समुदायों को अक्सर म्लेच्छ के रूप में जाना जाता जिसका अर्थ है कि वे जाति , समाज और बोली जाने वाली भाषाओं के मानदंडों का पालन नहीं करते थे जो कि संस्कृत से उत्पन्न नहीं थे ।
- इन्होंने इस्लाम धर्म कबूल किया ।

इस्लाम अपनाने वाले सभी लोगों ने विश्वास के पांच स्तंभों को स्वीकार किया :

इस्लाम धर्म की पाँच बातें :-

1. एक ईश्वर , अल्लाह और पैगंबर मुहम्मद उनके दूत हैं ।
2. दिन में पाँच बार नमाज़ अदा करना (नमाज़ / सलात) ।
3. भिक्षा देना (ज़कात) ।
4. रमज़ान के महीने में उपवास (सवाम) ।
5. मक्का (हज) की तीर्थयात्रा करना ।

- सूफ़ीवाद का विकास :-
- इस्लाम के शुरुआती शताब्दियों में , धार्मिक दिमाग वाले लोगों का एक समूह , जिसे सूफ़ी कहा जाता है , खिलाफत के बढ़ते भौतिकवाद के विरोध में तप और रहस्यवाद में बदल गया ।
- सूफ़ियों ने कुरान की व्याख्या करने की हठधर्मी परिभाषाओं और विद्वानों के तरीकों की आलोचना की और अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर इसकी व्याख्या की ।

खानकाह :-

- खानकाह में सूफी संत रहते थे ये उनका निवास स्थल था ।
- 11 वीं शताब्दी तक , सूफीवाद एक अच्छी तरह से विकसित आंदोलन में विकसित हुआ ।
- सुफो ने शेख , पीर या मुर्शिद के नाम से एक शिक्षण गुरु द्वारा नियंत्रित धर्मशाला या खानकाह (फारसी) के आसपास समुदायों को संगठित करना शुरू किया । उन्होंने शिष्यों (मुरीदों) को नामांकित किया और एक उत्तराधिकारी (खलीफा) नियुक्त किया ।

सूफी सिलसिला :-

- सूफी सिलसिला का अर्थ एक श्रृंखला है , जो गुरु और शिष्य के बीच एक निरंतर कड़ी को दर्शाता है , पैगंबर मुहम्मद के लिए एक अखंड आध्यात्मिक वंशावली के रूप में फैला है ।
- जब शेख की मृत्यु हो गई , तो उनका मकबरा - दरगाह (दरगाह) उनके अनुयायियों की भक्ति का केंद्र बन गया और उनकी कब्र पर तीर्थयात्रा या ज़ियारत की प्रथा , विशेषकर पुण्यतिथि की शुरुआत हुई ।

चिश्ती सिलसिला :-

- 12 वीं शताब्दी तक सूफी समुदाय के चिश्ती अधिक प्रभावशाली हो गया था चिश्ती सूफियों का सबसे महत्वपूर्ण समूह था जो भारत चले गए ।
- इन्होंने भारतीय परम्परा को अपनाया । इन्होंने स्वयं को परिवेश के अनुसार ढाल लिया ।

चिश्ती खानकाह में जीवन :-

- खानकाह सामाजिक जीवन का केंद्र था ।
- चौदहवीं शताब्दी में घियासपुर में यमुना नदी के तट पर शेख निज़ामुद्दीन की धर्मशाला बहुत प्रसिद्ध थी । शेख यहाँ रहते थे और सुबह और शाम आगंतुकों से मिलते थे ।

- वहाँ एक खुली रसोई (लंगर) थी और यहाँ सुबह से लेकर देर रात तक हर क्षेत्र के लोग आते थे ।
- यहां आने वालों में अमीर हसन सिज्जी , अमीर खुसरू और जियाउद्दीन बरनी शामिल थे ।
- सूफी संतों की कब्रों के लिए तीर्थयात्रा (ज़ियारत) आम थी । यह सूफियों की आध्यात्मिक कृपा (बरकत) मांगने का एक अभ्यास था ।

चिश्ती उपासना जियारत ओर कव्वाली :-

- जियारत - तीर्थ यात्रा , दर्शन करना । यह दूर - दूर से लोग अलग - अलग सम्प्रदायो से यहाँ पिछले 700 सालो से आस्था प्रकट करने आते हैं ।
- अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन की दरगाह बहुत लोकप्रिय थी । इस दरगाह को मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी द्वारा वित्त पोषित किया गया था ।
- बादशाह अकबर ने 14 बार दौरा किया और दरगाह के परिसर के भीतर एक मस्जिद का निर्माण किया । विशेष रूप से प्रशिक्षित संगीतकारों या कव्वालों ने दिव्य परमानंद को जगाने के लिए संगीत और नृत्य का प्रदर्शन किया । स्थानीय भाषा में बाबा फरीद की रचनाओं को गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया था ।
- कर्नाटक में , सूफियों को पहले से मौजूद भक्ति परंपराओं से प्रेरित किया गया और उन्होंने दखनी , लुरिनामा (लोलाबीज़) और शादिनमा (विवाह गीत) की रचना की ।
- दिल्ली के सुल्तानों ने हमेशा सूफियों को प्राथमिकता दी , हालांकि उनके बीच संघर्ष के उदाहरण थे ।

उत्तरी भारत में नए भक्ति मार्ग :-

- कबीर 14 वीं - 15 वीं शताब्दी के कवि - संत थे ।
- कबीर के छंदों को तीन अलग - अलग परंपराओं में संकलित किया गया था ।
- कबीर बीजक उत्तर प्रदेश में कबीरपंथ द्वारा संरक्षित है ।
- कबीर ग्रंथावली राजस्थान में दादूपंथ से जुड़ी है ।

- उनके कई छंदों को आदि ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया था ।
- कबीर ने परम वास्तविकता को अल्लाह , खुदा , हज़रत और पीर बताया । उन्होंने वैदिक परंपराओं से भी शब्दों का इस्तेमाल किया , जैसे अलख , निराकार , ब्राह्मण , आत्मान आदि ।
- कबीर ने सभी प्रकार के दर्शन अर्थात् वैदिक परंपराओं , योगिक परंपराओं और इस्लामी विचारों को स्वीकार किया ।
- कबीर के विचारों ने संभवतः संवाद और बहस के माध्यम से क्रिस्टलाइज़ किया ।
- गुरु नानक के संदेश को उनके भजन और उपदेशों में पिरोया गया है , जहां उन्होंने निर्गुण भक्ति के एक रूप की वकालत की ।
- गुरु नानक के अनुसार , पूर्ण या 'रब 'का कोई लिंग या रूप नहीं था । उनके विचारों को पंजाबी में 'शबद 'नामक भजनों के माध्यम से व्यक्त किया गया ।
- गुरु अर्जन ने आदि ग्रंथ साहिब में बाबा फरीद , रविदास और कबीर के भजनों के साथ गुरु नानक के भजनों को संकलित किया जा में , गुरु गोबिंद सिंह ने गुरु तेग बहादुर की रचनाओं को शामिल किया और इस शास्त्र को गुरु ग्रंथ साहिब 'के नाम से जाना गया ।
- मीराबाई भक्ति परंपरा की एक प्रसिद्ध महिला - कवि थीं । उसने कई गीतों की रचना की जो भावनाओं की तीव्र अभिव्यक्ति की विशेषता थी ।
- मीराबाई के गीत ने गुजरात और राजस्थान में गरीब और निम्न जाति के लोगों को प्रेरित किया ।
- पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में शंकरदेव असम में वैष्णववाद के एक प्रमुख प्रस्तावक थे ।